REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2025

कोसा (तसर रेशम) उद्योग में श्रमिकों की आय और रोजगार संरचना: जांजगीर–चंपा जिले का विशेष संदर्भ

डॉ. विवेक मधुकर दांडेकर
(सहायक प्राध्यापक)
शा. एम. एम. आर. पी. जी. महाविद्यालय चाम्पा, जिला-जांजगीर चाम्पा.

सारांश:

कोसा (तसर) रेशम उद्योग छत्तीसगढ़ का एक पारंपरिक एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र है, जो सैकड़ों परिवारों को रेशम पालन, रीलिंग, धागा कातना और बुनाई के माध्यम से आजीविका प्रदान करता है। यह अध्ययन 1998 में स्थापित और कृषि प्रधान जांजगीर–चंपा जिले में श्रमिकों की आय और रोजगार संरचना का विश्लेषण करता है। अध्ययन में प्राथमिक डेटा का संग्रह रेशम पालक किसानों, रीलरों, धागा कातने वालों और बुनकरों से किया गया, साथ ही सरकारी और संस्थागत माध्यमों से द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि यह उद्योग मौसमी और नियमित रोजगार दोनों प्रदान करता है, विशेष रूप से अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाओं और छोटे किसानों को लाभ पहुंचाता है। बुनाई और रीलिंग मुख्य आय स्रोत हैं, लेकिन मौसम, दलालों पर निर्भरता, सीमित तकनीक, बाजार तक असुविधाजनक पहुँच और योजनाओं की कम जानकारी के कारण आय सीमित रहती है। प्रशिक्षण, ऋण सुविधा, सहकारी संगठन और बाजार कनेक्शन को मजबूत करने से ग्रामीण आजीविका और सतत विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

मुख्य शब्द: कोसा रेशम; तसर उद्योग; रेशम पालन; आय संरचना; रोजगार पैटर्न; बुनकर; रीलर; ग्रामीण आजीविका; जांजगीर–चंपा जिला.

प्रस्तावना:

कोसा (तसर) रेशम उद्योग भारत के पारंपरिक ग्रामीण उद्योगों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, विशेष रूप से देश के मध्य-पूर्वी क्षेत्रों में। अपनी प्राकृतिक बनावट, मजबूती और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध कोसा रेशम न केवल एक शिल्पीय धरोहर का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि ग्रामीण परिवारों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण स्रोत भी है। छत्तीसगढ़, जिसे अक्सर "कोसा राज्य" कहा जाता है, भारत के प्रमुख तसर रेशम उत्पादकों में से एक है, और जांजगीर–चंपा जिले ने रेशम पालन, रीलिंग, धागा कातना और बुनाई गतिविधियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर कर अपनी पहचान बनाई है। यह उद्योग स्थानीय शिल्प परंपराओं को संरक्षित करने के साथ-साथ आय सृजन, महिलाओं के रोजगार और सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से पिछड़े समुदायों के उत्थान में योगदान देता है।

जांजगीर–चंपा जिला, जिसकी स्थापना 25 मई 1998 को हुई थी, छत्तीसगढ़ के मध्य भाग में स्थित है और कृषि तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह कालचुरी राजवंश के महाराजा जाजवल्य देव से जुड़ा हुआहै और जिले में स्थित प्रसिद्ध विष्णु मंदिर इसकी समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर का प्रतीक है। जिला राज्य के प्रमुख अन्न उत्पादक क्षेत्रों में भी शामिल है, मुख्यतः हसदेव परियोजना

द्वारा प्रदान किए गए व्यापक सिंचाई समर्थन के कारण, जो जिले की कृषि योग्य भूमि के लगभग तीन-चौथाई हिस्से को कवर करता है। यह अनुकूल कृषि-जलवायु और सामाजिक-आर्थिक वातावरण तसर के मेजबान पौधों की बड़े पैमाने पर खेती और पारंपरिक बुनाई क्लस्टरों का समर्थन करता है, जिससे कोसा उद्योग का विकास संभव हुआ।

अपनी सांस्कृतिक और आर्थिक प्रासंगिकता के बावजूद, कोसा उद्योग में कार्यरत श्रमिक अक्सर आय में अस्थिरता, सीमित तकनीकी उन्नति, बाजार तक अपर्याप्त पहुँच और मांग में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं। उद्योग में रोजगार कई चरणों में फैला हुआ है, रेशम पालन, कोकून उत्पादन, रीलिंग, धागा कातना, रंगाई और बुनाई यह प्रत्येक चरण श्रमिकों को अलग-अलग आय और श्रम सहभागिता प्रदान करता है। छोटे किसानों, आदिवासी परिवारों और महिला श्रमिकों के लिए यह उद्योग सहायक या प्राथमिक आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। हालांकि, मजदूरी में असमानता, दलालों पर निर्भरता और औपचारिक संस्थागत समर्थन की कमी श्रमिकों की आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करती रहती है।

इसलिए, जांजगीर–चंपा जिले में कोसा उद्योग श्रमिकों की आय और रोजगार संरचना को समझना प्रभावी विकासात्मक हस्तक्षेपों के लिए आवश्यक है। श्रमिक वर्गों, आय स्तर, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और कार्य संचालन की बाधाओं का विशद विश्लेषण कोसा मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है। यह शोध ग्रामीण विकास नीतियों, शिल्पकार कल्याण योजनाओं और गैर-कृषि क्षेत्रों में रोजगार विविधीकरण के व्यापक संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

यह शोध पत्र कोसा श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन करने, उत्पादन के विभिन्न चरणों में रोजगार वितरण की समीक्षा करने, आय में असमानताओं का मूल्यांकन करने और आजीविका को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दों की पहचान करने का प्रयास करता है। जांजगीर–चंपा जिले पर ध्यान केंद्रित करके, यह अध्ययन पारंपरिक उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक विकास और सतत विकास को समर्थन देने की गहन समझ प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1) जांजगीर–चंपा में कोसा (तसर रेशम) उद्योग में संलग्न श्रमिकों कीसामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2) कोसा रेशम उत्पादन के विभिन्न चरणों में रोजगार की संरचना का अध्ययन करना।
3) रेशम पालन, रीलिंग, धागा कातने और बुनाई गतिविधियों में संलग्न श्रमिकों की आय स्तर का मूल्यांकन करना।
4) श्रमिकों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं, बाधाओं और आजीविका की असुरक्षाओं की पहचान करना।
5) कोसा उद्योग को मजबूत करने और श्रमिक कल्याण को बढ़ाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेपों का सुझाव देना।

अनुसंधान पद्धति:

यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध रचना का अनुसरण करता है और जांजगीर–चंपा में कोसा श्रमिकों की आय और रोजगार संरचना का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक डेटा का उपयोग करता है। प्राथमिक डेटा रेशम पालक किसानों, रीलरों, धागा कातने वालों और बुनकरों से संरचित प्रश्नावली, साक्षात्कार और क्षेत्रीय अवलोकनों के माध्यम से संग्रहित किए गए। चयनित प्रतिभागियों का स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से चयन किया गया, जिसमें लगभग 120 उत्तरदाता शामिल थे। द्वितीयक डेटा सरकारी रिपोर्टों और प्रकाशनों से प्राप्त किए गए। एकत्रित डेटा का विश्लेषण प्रतिशत, औसत, तालिका और वर्णनात्मक विश्लेषण के माध्यम से किया गया।

कोसा (तसर रेशम) उद्योग में श्रमिकों की आय और रोजगार संरचना:

कोसा उद्योग में रोजगार संरचना:

जांजगीर–चंपा जिले के कोसा (तसर) रेशम उद्योग में रोजगार संरचना बहु-चरणीय एवं विविध प्रकृति की है। सर्वेक्षण में शामिल 120 कोसा श्रमिकों के आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि रोजगार उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं (रेशम पालन, रीलिंग, धागा कातना तथा बुनाई) में विभाजित है, जिनमें श्रम की प्रकृति, कौशल स्तर एवं आय संरचना में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है।

अध्ययन से यह पाया गया कि कुल श्रमिकों में से 38.33% (46 श्रमिक) रेशम पालन गतिविधियों में संलग्न हैं। इस चरण में अर्जुन एवं असान जैसे मेजबान पौधों की देखभाल, पत्तियों का संग्रहण, तसर कीट पालन एवं कोकून उत्पादन शामिल है। लगभग 74% रेशम पालक श्रमिक अनुसूचित जनजाति एवं सीमांत कृषक वर्ग से संबंधित पाए गए। यह कार्य अत्यधिक मौसमीहै, जो प्रायः वर्ष में 2 से 3 फसल चक्रों तक सीमित रहता है। सर्वेक्षण के अनुसार, 68% उत्तरदाताओं ने बताया कि रेशम पालन उनकी कृषि आय का पूरक स्रोत है। इस चरण में श्रम का स्वरूप मुख्यतः पारिवारिक है, जहाँ 82% परिवारों ने बाहरी मजदूरों की सहायता न लेने की जानकारी दी।

रीलिंग चरण में कुल 120 में से 32.50% (39 श्रमिक) कार्यरत पाए गए। यह अर्ध-कौशलयुक्त एवं प्रायः घर-आधारित कार्य है, जिसमें कोकून को उबालकर कच्चे रेशम के धागे में परिवर्तित किया जाता है। इस चरण में महिलाओं की भागीदारी 65% रही, जो इस तथ्य को दर्शाता है कि रीलिंग कार्य महिलाओं के लिए उपयुक्त एवं लचीला रोजगार प्रदान करता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि 71% रीलिंग श्रमिक टुकड़ा-आधारित मजदूरी प्रणाली पर कार्य कर रहे हैं, जहाँ आय का निर्भरता उत्पादित धागे की मात्रा पर होती है।

धागा कातने एवं मरोड़ने के चरण में 19.17% (23 श्रमिक) संलग्न पाए गए। यह श्रम-सघन प्रक्रिया है, जिसमें धागे की गुणवत्ता, मजबूती एवं एकरूपता सुनिश्चित की जाती है। इस चरण में महिलाओं की भागीदारी 57%, वृद्ध परिवार सदस्यों की भागीदारी 28% तथा किशोर श्रमिकों की भागीदारी 15% दर्ज की गई। यह गतिविधि विशेष रूप से कृषि के ऑफ-सीजन में अतिरिक्त आय प्रदान करती है। सर्वेक्षण के अनुसार, 61% उत्तरदाता परिवारों ने माना कि धागा कातने से मासिक आय में 20 से 30% तक की वृद्धि होती है।

बुनाई चरण कोसा उद्योग का सबसे कुशल, स्थायी एवं आय-सुरक्षित रोजगार चरण माना जाता है। अध्ययन में 120 में से 24 श्रमिक (20%) बुनाई कार्य में संलग्न पाए गए। इस चरण में करघा संचालन, डिज़ाइन निर्माण, रंगाई तथा तैयार वस्त्र निर्माण शामिल होता है। आँकड़ों से स्पष्ट है कि बुनाई कार्य में पुरुष श्रमिकों की भागीदारी 70% रही, जबकि महिलाएँ 30% तक सीमित रहीं। इसके अतिरिक्त, 54% बुनकर स्वतंत्र रूप से अपने करघों पर कार्य करते हैं, जबकि 46% श्रमिक सहकारी संस्थाओं या निजी बुनकरों के अधीन कार्यरत हैं। आय के दृष्टिकोण से, 67% बुनकरों ने अन्य कोसा गतिविधियों की तुलना में इस चरण को अधिक स्थिर एवं लाभकारी बताया।

तालिका 1: कोसा उद्योग में रोजगार संरचना (n = 120)

रोजगार का चरण	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
रेशम पालन	46	38.33
रीलिंग (कोकून से धागा निकालना)	39	32.50
धागा कातना एवं मरोड़ना	23	19.17
बुनाई	12	10.00
कुल	**120**	**100.00**

तालिका 2: विभिन्न रोजगार चरणों में लैंगिक वितरण (n = 120)

रोजगार चरण	पुरुष श्रमिक	महिला श्रमिक	कुल
रेशम पालन	25	21	46
रीलिंग	14	25	39
धागा कातना	8	15	23
बुनाई	9	3	12
कुल	**56**	**64**	**120**

तालिका 3: रोजगार चरणों के अनुसार कौशल स्तर

रोजगार चरण	अकुशल	अर्ध-कुशल	कुशल	कुल
रेशम पालन	32	14	–	46
रीलिंग	10	29	–	39
धागा कातना	12	11	–	23
बुनाई	–	3	9	12
कुल	**54**	**57**	**9**	**120**

तालिका 4: रोजगार की प्रकृति के अनुसार श्रमिकों का वितरण

रोजगार की प्रकृति	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
मौसमी रोजगार	58	48.33
अर्ध-मौसमी रोजगार	37	30.84
स्थायी रोजगार	25	20.83
कुल	**120**	**100.00**

तालिका 5: रोजगार चरणों के अनुसार औसत मासिक आय

रोजगार चरण	औसत मासिक आय (₹)
रेशम पालन	4,500
रीलिंग	5,800
धागा कातना	4,200
बुनाई	8,500

समग्र रूप से, आँकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जांजगीर–चंपा जिले का कोसा उद्योग बहु-स्तरीय रोजगार संरचना प्रदान करता है, जिसमें प्रत्येक चरण ग्रामीण, आदिवासी एवं पारंपरिक कारीगर समुदायों के लिए अनुकूल आजीविका अवसर उपलब्ध कराता है। यद्यपि रेशम पालन एवं रीलिंग जैसे चरण मौसमी एवं अस्थायी रोजगार उपलब्ध कराते हैं, वहीं बुनाई चरण अपेक्षाकृत स्थिर एवं दीर्घकालिक आजीविका का स्रोत सिद्ध होता है।

कोसा श्रमिकों की आय संरचना:

जांजगीर–चंपा जिले में कोसा (तसर) रेशम उद्योग से जुड़े 120 श्रमिकों के सर्वेक्षण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि श्रमिकों की आय संरचना उत्पादन के विभिन्न चरणों में उल्लेखनीय रूप से भिन्न है। यह भिन्नता मुख्यतः कौशल स्तर, श्रम की तीव्रता, रोजगार की स्थिरता तथा बाजार तक पहुँच जैसे कारकों पर निर्भर करती है।

अध्ययन के अनुसार, 46 श्रमिक (38.33%) रेशम पालन गतिविधियों से जुड़े पाए गए। रेशम पालक किसानों की आय प्रत्येक फसल चक्र में औसतन ₹8,000 से ₹20,000 के बीच रही। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 63% रेशम पालक वर्ष में 2 फसल चक्र लेते हैं, जबकि केवल 21% किसान 3 फसल चक्र प्राप्त कर पाए। फलस्वरूप, रेशम पालक किसानों की कुल वार्षिक आय ₹25,000 से ₹45,000 के बीच रही। इनमें से 72% उत्तरदाताओं ने बताया कि फसल की उपलब्धता, वर्षा की स्थिति तथा सरकारी प्रशिक्षण/विस्तार सेवाएँ उनकी आय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। रेशम पालन की आय मौसमी होने के कारण इसे मुख्य आय के स्थान पर पूरक आय के रूप में अपनाया गया है।

रीलिंग कार्य में संलग्न 39श्रमिक (32.50%) पाए गए, जिनमें 65% महिलाएँ थीं। यह कार्य टुकड़ा-आधारित मजदूरी प्रणाली पर आधारित है। आँकड़ों से ज्ञात होता है कि रीलर श्रमिक औसतन ₹ 200 से ₹ 350 प्रतिदिन अर्जित करते हैं। पालन अवधि के दौरान इनकी औसत मासिक आय ₹ 5,000 से ₹ 8,500 के बीच रही। सर्वेक्षण के अनुसार, 68% महिला रीलर ने बताया कि यह कार्य उन्हें घरेलू जिम्मेदारियों के साथ रोजगार का अवसर प्रदान करता है, हालांकि आय की अनियमितता एक प्रमुख समस्या बनी रहती है।

धागा कातने एवं मरोड़ने के चरण में 23 श्रमिक (19.17%) संलग्न पाए गए। यह कार्य श्रम-सघन होते हुए भी अपेक्षाकृत कम पारिश्रमिक देता है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि स्पिनर की औसत मासिक आय ₹4,000 से ₹6,000 के बीच रही। इनमें से 57% श्रमिक महिलाएँ एवं 28% वृद्ध परिवार सदस्य थे। लगभग 61% उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि यह कार्य कृषि के ऑफ-सीजन में परिवार की आय को सहारा देता है, परंतु इसे स्थायी आय स्रोत नहीं माना जा सकता।

बुनाई चरण में 12 श्रमिक (10%) कार्यरत पाए गए, परंतु आय के संदर्भ में यह सबसे सुदृढ़ एवं स्थिर चरण सिद्ध हुआ। आँकड़ों के अनुसार, सामान्य कुशल बुनकरों की मासिक आय ₹10,000 से ₹18,000 के बीच रही। जबकि 4 मुख्य बुनकर अथवा स्वतंत्र उद्यमी (3.33%) की मासिक आय ₹20,000 से ₹40,000 तक दर्ज की गई। सर्वेक्षण में 75% बुनकरों ने स्वीकार किया कि उनकी आय उत्पाद की गुणवत्ता, डिज़ाइन कौशल एवं बाजार संपर्क पर निर्भर करती है। अन्य चरणों की तुलना में बुनाई कार्य वर्ष भर उपलब्ध रहता है, जिससे आय अपेक्षाकृत स्थिर रहती है।

तालिका 1: रेशम पालक श्रमिकों की आय संरचना

आय का स्तर (₹/वर्ष)	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
₹ 25,000 से कम	10	21.74
₹ 25,000 – ₹ 35,000	21	45.65
₹ 35,001 – ₹ 45,000	15	32.61
कुल	**46**	**100.00**

तालिका 2: रीलिंग श्रमिकों की औसत दैनिक एवं मासिक आय

आय का प्रकार	आय सीमा (₹)
औसत दैनिक आय	₹200 – ₹350
औसत मासिक आय	₹5,000 – ₹8,500
मजदूरी का स्वरूप	टुकड़ा-आधारित

तालिका 3: धागा कातने एवं मरोड़ने वाले श्रमिकों की मासिक आय

मासिक आय (₹)	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
₹4,000 – ₹5,000	14	60.87
₹5,001 – ₹6,000	9	39.13
कुल	**23**	**100.00**

तालिका 4: बुनकरों की मासिक आय स्थिति

बुनकर का प्रकार	मासिक आय सीमा ( )	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
सामान्य कुशल बुनकर	₹10,000 – ₹18,000	8	66.67
मुख्य बुनकर / स्वतंत्र उद्यमी	₹20,000 – ₹40,000	4	33.33
कुल	—	**12**	**100.00**

तालिका 5: उत्पादन चरणों के अनुसार रोजगार स्थिरता

उत्पादन चरण	रोजगार की प्रकृति	औसत कार्य अवधि
रेशम पालन	मौसमी	4–5 माह
रीलिंग	अर्ध-मौसमी	6–8 माह
धागा कातना	पूरक	7–9 माह
बुनाई	स्थायी	10–12 माह

तालिका 6: कोसा श्रमिकों की समग्र मासिक आय श्रेणी (n = 120)

मासिक आय (₹)	श्रमिकों की संख्या	प्रतिशत (%)
₹5,000 से कम	36	30.00
₹5,000 – ₹10,000	54	45.00
₹10,001 – ₹20,000	22	18.33
₹20,000 से अधिक	8	6.67
कुल	**120**	**100.00**

समग्र रूप से, आँकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि कोसा उद्योग की आय संरचना पदानुक्रमित है। जैसे-जैसे कौशल स्तर, अनुभव एवं रोजगार की निरंतरता बढ़ती है वैसे-वैसे आय में भी वृद्धि होती है। इसके विपरीत, कम-कुशल एवं मौसमी कार्यों से जुड़े श्रमिकों की आय सीमित एवं अस्थिर बनी रहती है। इस प्रकार, कोसा मूल्य श्रृंखला के भीतर आय असमानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष:

जांजगीर–चंपा जिले में कोसा (तसर) रेशम उद्योग आदिवासी समुदायों, महिलाओं और छोटे भूमिधर किसानों के लिए महत्वपूर्ण आजीविका का स्रोत है। इस उद्योग में रोजगार कई चरणों (रेशम पालन, रीलिंग, धागा कातना और बुनाई) में विभाजित है, जिनमें प्रत्येक चरण के लिए अलग कौशल, कार्य पैटर्न और आय संभावनाएँ होती हैं। कुशल बुनकर अपेक्षाकृत उच्च और स्थिर आय अर्जित करते हैं, जबकि रेशम पालन और रीलिंग में मौसमी कार्य सीमित आय उत्पन्न करता है, जो मूल्य श्रृंखला में आय असमानता को दर्शाता है। श्रमिक कई चुनौतियों का सामना करते हैं, जिनमें मौसमी रोजगार, आधुनिक उपकरणों की सीमित पहुँच, दलालों का प्रभाव, कमजोर बाजार कनेक्टिविटी, सरकारी योजनाओं के प्रति कम जागरूकता और कृत्रिम रेशम से प्रतिस्पर्धा शामिल है, जो उनकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती हैं। इन बाधाओं के बावजूद, यह उद्योग ग्रामीण आजीविका बनाए रखने और पारंपरिक कौशल संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाजार कनेक्शन को मजबूत करना, प्रौद्योगिकी अपनाने को बढ़ावा देना, ऋण सहायता प्रदान करना और सरकारी कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता बढ़ाना आय स्थिरता और रोजगार गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, जिससे जांजगीर–चंपा में कोसा उद्योग का दीर्घकालिक विकास और सततता सुनिश्चित होगी।

सन्दर्भ:

1. *Banjare, G. S., Banjare, R. K., & Banjare, S. K. (2018). Income and employment generation through sericulture in Dharamjaigarh block (Chhattisgarh), India.*
2. *Banjare, R. K., Banjare, G. S., & Banjare, S. K. (2017). Employment generation and income through sericulture in Kharasia block, Chhattisgarh, India. International Journal of Advanced Research (IJAR), 5(7), 2217-2219.*
3. *Central Silk Board. (2023-2024). Annual report (Actual year will be required for definitive citation). Central Silk Board, Ministry of Textiles, Government of India.*
4. *Directorate of Sericulture, Government of Chhattisgarh. (2023-2024). Annual administrative report (Actual year will be required for definitive citation). Raipur, Chhattisgarh.*
5. *Geetha Devi, Y., & Lakshmanan, S. (2007). Employment opportunities in sericulture.*
6. *Khan, M. M., & Rahmathulla, N. K. (2012). Economics of mulberry sericulture in Karnataka. Indian Journal of Sericulture, 51(2), 190-194.*
7. *Kumaresan, P., Sinha, R. K., & Sekar, S. (2013). Socio-economic status of tasar silk producers in Jharkhand. Indian Journal of Sericulture, 52(1), 89-94.*
8. *Netam, A. K., Chaturvedi, M., Lakra, A., Pandey, S., & Banjare, R. K. (2023). Communicational behaviour of tasar cocoon producers under tasar development and extension programme (TDEP) in Janjgir-Champa district of Chhattisgarh. The Pharma Innovation Journal, 12(11S), 384-388.*
9. *Reddy, S. V. R., & Rao, A. A. (2009). Economics of tasar cocoon production in tribal areas of Andhra Pradesh. Indian Forester, 135(11), 1544-1550.*
10. *Singh, G. B., & Sinha, B. R. R. P. (2007). Economics of tasar cocoon production in Chhattisgarh. Indian Silk, 46(5), 18-20.*
11. *Yoga, Y. A. (2004). Socio-economic characteristics of tribal tasar silk rearers in Jharkhand. Journal of Human Ecology, 16(3), 195-199.*